International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 5 January – February - 2026

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में साहित्य, समाज तथा संस्कृति के विविध आयाम

प्रा. डॉ. दत्तात्रय सदाशिव अनारसे

सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, शरदचंद्र पवार महविद्यालय, लोणंद.

DOI - 10.5281/zenodo.18919225

सारांश :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुडकर हिंदी भाषा में अनेक नये आयाम स्थापित हुए हैं | विश्व स्तर पर हिंदी को स्थापित करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बडी भूमिका रही है | मशीनी अनुवाद के कारण भारतीय ज्ञान परंपरा में हिंदी भाषा के माध्यम से देश ही नहीं विश्व के कोने- कोने तक प्रसारित हुई है | वर्तमान परिस्थितियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के बढते प्रभाव के कारण हिंदी साहित्य, समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव पडता दिखाई देता है | मनुष्य समाज बदलते परिवेश में नित-नए नियामों से काफी बदलाव नजर आता है | उसी को समुख रखते हुए समाज, साहित्य तथा संस्कृति के अनेकविध आयाम सामने आये हैं |

बदलाव प्रकृति का नियम है | उसको देखते हुए हिंदी साहित्य में अनेकविध नए चलचित्र नजर आते हैं | साहित्यिक प्रक्रियाओ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तमान में अनुप्रयोग जैसे अनुवाद सृजनात्मक लेखन और आलोचनात्मक विश्लेषण का मूल्यमापन करती है | साथ ही साथ मौलिकता, भावनात्मक गहराई और सांस्कृतिक सूक्ष्मताओं के संरक्षण से जुडी चुनौतियों का भी विश्लेषण करती है | साथ ही कॉपीराइट के अधिनियम १९५७ के अनुसार लेखत्व कानूनी सवालों में निहित पूर्वग्रह जैसे नैतिक मुद्दे पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाता है |

भारतीय साहित्य परंपरा मे डिजिटल मानविकी विकास और हिंदी विज्ञान कथा को आधार बनाया जा रहा है | इससेभारत के साहित्यिक भविष्य की दिशा को रेखांकित किया जा सकता है | जिसने हिंदी साहित्य के लिए उत्पन्न होने वाले विमर्शों मे मानव कृत्रिम बुद्धिमत्ता सह-रचनात्मकता की संभावनाओं पर विचार किया जा सकता है | बदलते माहौल में हिंदी के रचनाकारों तथा रचनाओं में विश्लेषित चित्रों और प्रसंगों में भी काफी मात्रा मे परिवर्तन देखा जा सकता है | कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बदलते प्रभाव के कारण उसी क्षमता का लाभ उठाने के लिए हिंदी साहित्य परिवारों को एक आलोचनात्मक, सांस्कृतिक कथा सामाजिक रूप को जागरूकता और नैतिकता नैतिक रूप से जिम्मेदारी को उठाने की कसरत करनी पडेगी |

AI आधारित टूल्स न केवल कविताओं, कहानियों और निंबंधों की रचना में सहायक सिद्ध हो रहे हैं, बल्कि हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच तक पहुंचाने में भी योगदान दे रही है | कृत्रिम बुद्धिमत्ता नए-नए विकसित रूप इक्कीसवीं सदी में अकादमिक विमर्श का एक युगांतकारी क्षेत्र बनकर उभरी है | कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित यह केवल एक तकनीकी प्रगति न होकर एक सांस्कृतिक परिघटना है | जिससे सृजन, संप्रेषण और आलोचना की सदियों पुरानी प्रक्रियाओं को मौलिक रूप से परिवर्तित करने की क्षमता रखती है |

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में समकालीन कालखंड मे प्रौद्योगिकी का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है | आज मोबाईल जैसे साधनों द्वारा उपन्यास और कहानियाँ इंटरनेट के जरिये रूपांतरित होती नजर आती है | जिससे प्रस्तुत

कृतियों में सामाजिक संबंधों को चित्रित कर रही है | इसके परिणाम स्वरूप रचनाकारों की बौद्धिक क्षमता में कुछ मात्रा मे कमियाँ निर्माण हो रही है | कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण कुछ पलों किसी भी रचना का रुपांतरण हो रहा है | इसके साथ ही प्रौद्योगिकी के साथ एक अवलोकनात्मक जुडाव दर्शाता है | कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एक सृजनात्मक उपकरण के रूप में स्वीकारने की प्रक्रिया में एक गहरा विरोधाभास निहित है |

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तमान साहित्यिक प्रक्रिया में अनुप्रयोग काफी मात्रा में बढता दिखाई देता है | यह एक केवल यह सैद्धांतिक अवधारणा नहीं रही, बल्कि एक व्यवहारिक उपकरण बन गई है | हर क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल हो रहा है | जिससे साहित्यिक प्रक्रियाओं के विभिन्न प्रकारों में अनुवाद, विश्लेषण और सृजन को प्रभावित कर रही है |

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में साहित्य, समाज तथा संस्कृति के क्षेत्र में अनेकविध अवसर एवं चुनौतियाँ समस्या के रूप में खडी होती है | सदियों से साहित्य दुनिया के सभी वर्गों को विकास की दिशा की ओर अग्रसर करती आई है | समाज में जीवंतता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण संस्कृति देती है | वर्तमान मे नई प्रौद्योगिकी निरंतर विकास हमारे साहित्य, समाज और संस्कृति के भविष्य को और भी अधिक आकर्षक करती है | कृत्रिम बुद्धिमत्ता से बहुत से विकास लाए जाते हैं | लेकिन उसके खतरे को भी भापना एवं सावधानी बरतना भीमहत्त्वपूर्ण होता है |

समकालीन साहित्य, समाज तथा संस्कृति पर प्रौद्योगिकी और तकनीकी प्रगति के सकारात्मक और बुरे तत्वों के बारे मे चर्चा हो सकती है | आज के दौर में यांत्रिकता ने अपना रौब जमा रखा है | कैसे डिजिटल मोड ने बायोमैक्ट्रिक्स के माध्यम से सामाजिक और व्यक्तिगत पहचान की बहस को नया रूप दिया है | जिसका प्रभाव समाज के कल्याण और निगरानी दोनों पर पडता है |

साहित्य के निर्माण में रचनाकारों की सृजनात्मकता महत्वपूर्ण मानी जाती है | आज के दौर में यही सृजनात्मकता की कसोटी सही दिशा मे काम करने से कतराती नजर आती है | क्योंकि आज किसी साहित्य प्रकारों मे कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विस्तार इतना बडा है कि, मनुष्य को सोचने से परे कर रहे हैं | साहित्य, समाज तथा संस्कृति के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह खडा होता दिखाई देता है | किसी नए अनुसंधान के दौर निश्चित मात्रा में बना रहता| है फिर भी वर्तमान परवेश में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बोलवाला बडे धूमधाम से हो रहा है |

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढते प्रभाव के कारण मनुष्य जाति की बौद्धिकता में पतन हो रहा है | हर एक मनुष्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस्तेमाल से हर्ष उल्हास में डूबता दिखाई देता है | लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित साहित्यिक कृतियों की मौलिकता, रचनात्मकता और कलात्मकता की प्रामाणिकता के संबंध में गहरे प्रश्न खडे हो रहे हैं | कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस्तेमाल से पाठ निर्माण कर सकता है, लेकिन वह साहित्य मानवीय अनुभव की गहराई और जटिलता को छू नही सकता | यही प्रश्न आनेवाले समय में आलोचनात्मक मूल्यांकन का विषय बन सकता है |

निष्कर्ष :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी साहित्य के दो राहों पर एक शक्तिशाली और विघटनकारी शक्ति के रूप में खडी है | यह अनुवाद के माध्यम से वैश्विक पहुंचबढाने, स्पर्धात्मक विश्लेषण के माध्यम से आलोचनात्मक अंतर्दृष्टि को गहरा करने और रचनात्मक सहायक के रूप में लेखको को नए उपकरण प्रदान करने की अपार क्षमताएँ रखती है | तथापि, इसकी क्षमताएँ गंभीर चुनौतियों और सीमाओं के साथ आती है |

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मौलिकता और संभावनात्मक गहराई की कमी, सांस्कृतिक सूक्ष्मताओं को समझने में इसके विफलता और भारतीय कानूनी एवं नैतिक ढाँचे के भीतर लेखकत्व, पूर्वग्रह और पारदर्शिता के अनसुलझे प्रश्न महत्वपूर्ण बाधाएँ है |

संदर्भ :

1) शर्मा, रमेश (2003) कृत्रिम बुद्धिमत्ताऔर साहित्यिक रचनात्मकता | नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन |
2) मिश्र, रामदरश हिंदी साहित्य का नया परिदृश्य | नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2005
3) Kumar, A. AI and Indian Languages New Delhi, sage Publications, 2022